रात्रि क्लास 22/10/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

मीठे2 रूहानी बच्चे जानते हैं कि बेहद का बाप आया हुआ है। दिल में ख्याल आवेगा ना। आत्मा कहती बाबा आया। कौन सा बाबा? बेहद का बाबा। बाबा अक्षर बहुत ही मीठा है; क्योंकि वरसा बहुत मीठा लगता है। तुम बच्चे जानते हो हम बाबा से विश्व की बादशाही का वरसा ले रहे हैं तो बहुत खुशी होती है। लौकिक से क्या मिलता है इसके भेंट में दो मुट्ठी भी नहीं मिलती। बाबा से तो 21 जन्मों लिए बहुत सुख मिलता है। बाप भी समझते हैं यह मेरे बच्चे विश्व के मालिक बनने वाले हैं। बाप को भी खुशी होती है। अन्दर में उनकी प्यार रिगार्ड रहता है। बाप बच्चों को प्यार करते हैं। बच्चे फिर बाप को रिगार्ड प्यार देते हैं। यह है रूहानी बाप। हम सभी रूहों का बाप। इस बाप से तो बेहद का सुख मिलता है। गाया हुआ है बाप बच्चों को कहते हैं तुम्हारे पास जो भूत हैं वह सभी मेरे हवाले करो। गुरु लोग भी कहते हैं तो तुम यह दान में दे दो। काम के लिए तो कहेंगे अच्छा 6 मास, 2 मास में जाना। विषय विकार जो है वह दान दे दो; परन्तु कर के अल्पकाल के लिए देते हैं करके उसी जन्म लिए। बेहद का बाप तो कहते हैं यह 5 विकार दान में दे दो। गुरु लोग झोली ऐसे कर बैठते हैं। अभी बाप समझाते हैं यह 5 भूत ही दुखी बनाते हैं। नम्बरवन है काम। इनको छोड़ दो। यह सभी विकार यहाँ छोड़ दो। साथ में रह जावेगा तो पद कम हो जावेगा। मोह भी कम नहीं है। बन्दर में कितना मोह होता है। बाप जानते हैं यह पुरानी दुनिया बदल रही है। नई दुनिया में भूत होते ही नहीं। तो यहाँ इनको छोड़ना जरूर है। नहीं तो सज़ा भी खावेंगे और पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। वह फिर सदैव के लिए हो जावेगा। किसके पास भी भूत है तो निकालना है। फिर 21 जन्म कोई भूत होगा ही नहीं। कोई भी भूत रह जावेगा तो अपन को भी दुखी औरों को भी दुखी करेंगे। बाप तो दुखहर्ता–सुखकर्ता है। यहाँ ही सभी भूतों का दान दे दो। नहीं तो खुद को भी दुखी करेंगे। यह किचड़ा हैं जिन्होंने ही आधा कल्प दुखी किया है। अभी बाप कहते हैं दान दे दो। दान कर वापिस लिया तो हरिश्चन्द्र मिसल हो जावेगा। यह एक कथा है। दृष्टान्त इस समय के हैं। सतयुग में तो शास्त्र आदि होते ही नहीं। तो अभी तुम बच्चे समझते हो यह भूत इस समय छोड़नी है। बाप कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। फिर बृहस्पत की दशा बैठ जावेगी। बाप पूछते हैं। जिसके पास कोई भूत है तो दे दो फिर 21 जन्म आवेंगे नहीं। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हराम खोर.....मूत का भार खाना कहा जाता है। वह तो बाप की महिमा गाते थे। अभी तुम समझते हो बेहद का बाप कैसे बैठ समझाते हैं। कृष्ण तो गीता सुना न सके। वह कह न सके कोटों में कोई मुझे जानते हैं। उनको देखकर तो सभी भागेंगे। यहाँ तो वह बात ही नहीं। बाप तो है सत्य। ऐसे बाप को आत्मा प्यार करती है। बुद्धि में नालेज है बाबा कमाल हे आपकी। कितना हमको सुख दते हो! सभी दुखों से छुड़ा देते हो। वहाँ कब अकाले मृत्यु होगी ही नहीं। बाप को याद तो कर सकते हैं ना। अनेक प्रकार की युक्तियाँ हैं। बड़ी खुशी अथाह आनन्द आता है। बाप विश्व का मालिक बनाते हैं; परन्तु है पराया शरीर, बूढ़े तन में। देख नहीं सकते हो। जानते हो। बाप बच्चों को एक ही बार अपना परिचय देते हैं। गायन है ना चाहे प्यार करो चाहे ठुकराओ हम आप का दर कभी नहीं छोड़ेंगे। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। ऐसे बाप के लिए कहते हो हम भूल जाते हैं। तो बाप डोरापा देते हैं ना। कोई पक्के निश्चय बुद्धि हैं तो प्रेम से आँसू भी आ जाते हैं। कल हम अपने राज्य में कितने सुखी थे। अथाह सुख था फिर पुजारी बने हैं। बाप कहते हैं तुमने कितनी ग्लानि की है। कृष्ण को कितना हिंसक विकारी बना दिया है। जिसको फिर कहते हैं कृष्ण भगवान है! क्या2 बातें लिख दी हैं। फिर रामचन्द्र भगवान के लिए क्या2 लिख दिया है। ग्लानि की बातें सुनाकर कितने को अपने धर्म में कनवर्ट कर देते हैं। एक तो शास्त्रों ने नुकसान किया है और फिर मेरी ग्लानि की है। झूठ सुनते आते हैं समझाते हैं श्रीमत पर चलो तो श्रेष्ठ बनो। बनाने वाला तो बाप ही है। बाप आते हैं जरूर। अभी भगवान कृष्ण है या बाप जो राजयोग सिखलाते हैं वह भगवान है। आगे जन्म में भगवान से राजयोग सीखे हैं। छोटे2 बच्चे बैठ ऐसी2 समझावे तो नाम बाला

हो जावेगा। तुम्हारे चरणों में आ जावेंगे। यह कब भी दिल में न आना चाहिए कि हम देते हैं। जिनको दिल में आता है हम देते हैं वह तो पापात्माएँ हैं। देते क्या हो! बहुतों में ज्ञान न होने कारण फिर पूछते रहते हैं। कितना दें, क्या करूँ। अरे, तुम देते नहीं हो लेते हो। मम्मा गरीब की बच्ची थी एक कौड़ी भी नहीं ले आई फिर कितना ऊँच मर्तबा पाती है। लक्ष्मी! सर्विसएबुल बन गई और पूर्ण पवित्र। बाबा हिस्ट्री जागराफी को जानते हैं। कैसे आई। कुमारी थी। बाबा गरीब निवाज है ना। तो बाप समझाते हैं ऐसे मत समझो शिवबाबा पास कितना धन देवें। 50 दे दें ठीक है कि 100 देवें तुम क्या समझती हो। ब्राह्मणी से पूछते हैं। ज्ञान पूरा है नहीं। इतना देवें कि इतना देवें कितना देवें। इतना ठीक है? तो बाबा समझ जाते हैं पूरी शिक्षा मिली न है। बाप ने समझाया है धर्मशाला, हॉस्पीटल आदि बनाते हैं बड़ा खर्चा करते हैं। एक जन्म लिए रिटर्न में सुख अल्पकाल का मिलता है। समझो राजा बनते हैं। फिर किसको दुख दिया होगा तो शारीरिक रोग होता रहेगा। सदा सुखी तो बन नहीं सकते। बेहद का बाप बच्चों लिए सौगात ले आते हैं। बाप कहते हैं तीरी पर बहिष्त तुम बच्चों के लिए लाता हूँ। तुमको दोनों बाप कितना श्रृंगारते हैं। इस समय सभी वनवास में हो। तुम्हारा ससुर घर है स्वर्ग। संगमयुग है दोनों पियरघर। कितना तुमको श्रृंगारते हैं। ज्ञान और योग दोनों से श्रृंगारते हैं। दोनों बाप मिलते हैं बच्चों को श्रृंगार करने। तो उनको बड़ा प्यार से याद करना चाहिए। बाप हमको सुखी बनाते हैं तो हम बच्चे भी किसको दुख नहीं दे सकते। तुम मीठे2 फूल बनते हो। बनना ही है यहाँ। माया भी दुस्तर है। झट भुला देती है। क्रोध दान दे फिर अगर किया तो सौणा दण्ड पड़ जावेगा। सच्चे बाप के साथ सच्चा होना चाहिए। भूतों को छोड़ते जाओ। नहीं तो बहुत घाटा पड़ता जावेगा। विकारों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। काम है जबरदस्त। उनके लिए राखी बांधी जाती है। यह 5 भूत रावण के हैं ना। यहाँ आते हो तो यह सभी यहाँ ही छोड़ जाना है। प्रतिज्ञा करनी है हम किसकी आत्मा कब नहीं दुखावेंगे। बाप किसको दुख देते हैं क्या? वह तो सभी को सुखी ही बनाते हैं। अपने ऊपर बड़ी खबरदारी रखनी होती है। विश्व का माकिक बनना कोई कम बात है क्या। तुम जानते हो हम हर 5000 वर्ष बाद बाप से यह वरसा पाते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।